



JOURNAL OF MASS MEDIA AND MANAGEMENT

ISSN: 3049-3021 (Online)

Journal Website: www.jmmm.in

Research Article

SR: JMMM/09/2026
ISSUE:03

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में सांस्कृतिक पत्रकारिता का बदलता स्वरूप : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

आकाश कुमार (शोधार्थी) मीडिया अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी केंद्रीय वि.वि, मोतिहारी, बिहार
डॉ. साकेत रमण (सहायक आचार्य) मीडिया अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी केंद्रीय वि.वि, मोतिहारी, बिहार

सारांश

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने मीडिया एवं पत्रकारिता की कार्यप्रणाली में व्यापक परिवर्तन किए हैं। समाचार संकलन, संपादन, अनुवाद, तथ्य-जाँच तथा सामग्री निर्माण जैसी प्रक्रियाएँ एआई आधारित तकनीकों से अधिक तेज और प्रभावी हुई हैं। इसका प्रभाव सांस्कृतिक पत्रकारिता पर भी स्पष्ट दिखाई देता है, जो भारतीय संस्कृति, लोक परंपराओं, भाषाओं और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण एवं प्रसार का महत्वपूर्ण माध्यम है। यह अध्ययन गुणात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है तथा द्विक तीयक स्रोतों के माध्यम से एआई के सांस्कृतिक पत्रकारिता पर प्रभाव का विश्लेषण करता है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि एआई सांस्कृतिक सामग्री की पहुँच और दक्षता बढ़ाता है, किंतु सांस्कृतिक संदर्भों, स्थानीय संवेदनशीलताओं तथा नैतिक पक्षों को पूर्णतः समझने में अभी सीमित है। इसलिए प्रभावी सांस्कृतिक पत्रकारिता के लिए एआई और मानवीय संपादकीय विवेक का संतुलित समन्वय आवश्यक है।

कीवर्ड (Keywords): कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सांस्कृतिक पत्रकारिता, डिजिटल मीडिया, भारतीय संस्कृति, मीडिया नैतिकता।

प्रस्तावना

इक्कीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक में कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने मानव जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। शिक्षा, स्वास्थ्य, उद्योग, प्रशासन और संचार की तरह पत्रकारिता भी इस तकनीकी परिवर्तन से अछूती नहीं रही है। आज समाचार संस्थान समाचार संकलन, लेखन, संपादन, अनुवाद, तथ्य-जाँच, डेटा विश्लेषण और समाचार वितरण जैसे अनेक कार्यों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित तकनीकों का उपयोग कर रहे हैं। इससे समाचार निर्माण की प्रक्रिया अधिक तेज, प्रभावी और व्यापक हुई है, साथ ही पत्रकारिता के कार्य-तरीकों में भी महत्वपूर्ण बदलाव देखने को मिले हैं। इन परिवर्तनों का प्रभाव सांस्कृतिक पत्रकारिता पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। सांस्कृतिक पत्रकारिता केवल कला, साहित्य, संगीत, नृत्य, रंगमंच, लोककला, सांस्कृतिक विरासत और परंपराओं से जुड़ी घटनाओं का समाचार प्रस्तुत करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज की सांस्कृतिक चेतना, ऐतिहासिक स्मृति, सामाजिक मूल्यों और राष्ट्रीय पहचान को संरक्षित एवं सशक्त बनाने का महत्वपूर्ण माध्यम भी है। भारत जैसे बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश में इसकी भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि यह विविध संस्कृतियों के बीच संवाद, सहअस्तित्व और सामाजिक समरसता को प्रोत्साहित करती है। डिजिटल मीडिया और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विकास ने सांस्कृतिक पत्रकारिता के स्वरूप, प्रस्तुति शैली और प्रसार प्रणाली में व्यापक परिवर्तन किए हैं। आज चैटजीपीटी, जेमिनी, कोपाइलट, स्वचासलित अनुवाद प्रणाली, वॉयस रिकग्निशन, डेटा एनालिटिक्स तथा एआई आधारित चित्र और वीडियो निर्माण जैसे उपकरण सांस्कृतिक समाचारों को अधिक आकर्षक, बहुभाषी और वैश्विक बनाने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। साथ ही, व्यक्तिगत रुचि के अनुरूप समाचार अनुशंसा जैसी तकनीकों ने पाठकों की सहभागिता और पहुँच को भी बढ़ाया है। हालाँकि, इन तकनीकी उपलब्धियों के साथ अनेक गंभीर चुनौतियाँ भी देखने को मिल रही हैं। डीपफेक सामग्री, फेक न्यूज, एल्गोरिद्मिक पक्षपात, सांस्कृतिक तथ्यों की संदर्भहीन या गलत प्रस्तुति, स्थानीय भाषाओं और लोक परंपराओं की उपेक्षा तथा मानवीय संवेदनशीलता में कमी जैसी समस्याएँ सांस्कृतिक पत्रकारिता की विश्वसनीयता और सामाजिक उत्तर-

दायित्व पर प्रश्नचिह्न खड़े करती हैं। इसके अतिरिक्त, वैश्विक तकनीकी कंपनियों के एआई प्लेटफॉर्म पर बढ़ती निर्भरता समाचार संस्थानों की संपादकीय स्वायत्तता और सांस्कृतिक विविधता के संरक्षण के लिए भी नई चुनौतियाँ उत्पन्न कर रही है। ऐसी परिस्थितियों में आवश्यक है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता को केवल तकनीकी नवाचार के रूप में न देखा जाए, बल्कि उसके सांस्कृतिक, सामाजिक और नैतिक प्रभावों का भी गंभीरता से अध्ययन किया जाए। सांस्कृतिक पत्रकारिता का मूल उद्देश्य केवल सूचना का प्रसार करना नहीं, बल्कि समाज की सांस्कृतिक विरासत, लोकज्ञान, परंपराओं और मानवीय मूल्यों का संरक्षण एवं संवर्धन करना भी है। यदि कृत्रिम बुद्धिमत्ता का विकास और उसका उपयोग इन मूल्यों के अनुरूप किया जाए, तो यह सांस्कृतिक पत्रकारिता को अधिक प्रभावी, समावेशी और वैश्विक बना सकता है। इसके विपरीत, यदि तकनीकी दक्षता को ही सर्वोपरि माना गया, तो सांस्कृतिक पत्रकारिता अपनी संवेदनशीलता, संदर्भपरकता और मानवीय दृष्टि खो सकती है। इसी संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में सांस्कृतिक पत्रकारिता के बदलते स्वरूप, उसके प्रभाव, संभावनाओं और चुनौतियों का विश्लेषण करना है, ताकि यह समझा जा सके कि तकनीकी नवाचार और सांस्कृतिक मूल्यों के बीच संतुलन स्थापित करते हुए भविष्य की सांस्कृतिक पत्रकारिता को किस दिशा में विकसित किया जा सकता है।

शोध समस्या

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित तकनीकों के बढ़ते उपयोग ने सांस्कृतिक पत्रकारिता को बहुत बदल दिया है। यह पत्रकारिता के तरीके, काम करने के ढंग और प्रस्तुति शैली में परिवर्तन लाया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने सांस्कृतिक सामग्री बनाने और इसके प्रसार को अधिक प्रभावी बनाया है, लेकिन इसके साथ ही कुछ सवाल भी खड़े हो गए हैं। ये सवाल सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व, नैतिकता, एल्गोरिद्मिक पक्षपात और मानवीय संवेदनशीलता से जुड़े हुए हैं। भारतीय मीडिया के संदर्भ में यह अध्ययन देखता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता सांस्कृतिक पत्रकारिता पर क्या प्रभाव डाल रही है और इसके क्या सामाजिक-सांस्कृतिक परिणाम हो सकते हैं। यह अध्ययन इन सवालों का जवाब ढूँढने की कोशिश करता है और बताता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव हमारी संस्कृति और समाज पर कैसे पड़ सकता है।

शोध उद्देश्य

सांस्कृतिक पत्रकारिता में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग और उसके स्वरूप का अध्ययन करना।

एआई द्वारा सांस्कृतिक सामग्री के उत्पादन और प्रसार में आए परिवर्तनों का विश्लेषण करना।

सांस्कृतिक पत्रकारिता में एआई के अवसरों और चुनौतियों का मूल्यांकन करना।

शोध प्रश्न

सांस्कृतिक पत्रकारिता में एआई का उपयोग किस प्रकार किया जा रहा है?

एआई ने सांस्कृतिक पत्रकारिता की प्रस्तुति और पहुँच को किस प्रकार प्रभावित किया है?

एआई आधारित सांस्कृतिक पत्रकारिता के प्रमुख अवसर और चुनौतियाँ क्या हैं?

सांस्कृतिक विविधता और पत्रकारिता की नैतिकता को सुरक्षित रखते हुए एआई का उपयोग कैसे किया जा सकता है?

शोध पद्धति

यह अध्ययन वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इसमें द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। हमने अपनी शोध सामग्री पुस्तकों, शोध-पत्रों, जर्नलों, सरकारी रिपोर्टों, मीडिया अध्ययनों और डिजिटल स्रोतों से इकट्ठा की है। हमने प्राप्त सामग्री का विषय-वस्तु विश्लेषण और तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से अध्ययन किया है। हमारा उद्देश्य किसी सांख्यिकीय निष्कर्ष तक पहुँचना नहीं है, बल्कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता और सांस्कृतिक पत्रकारिता के बीच के संबंधों का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करना है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और सांस्कृतिक पत्रकारिता

कृत्रिम बुद्धिमत्ता

कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक तकनीक है जिससे कंप्यूटर मानव की तरह सीख सकते हैं, समझ सकते हैं, निर्णय ले सकते हैं, भाषा का विश्लेषण कर सकते हैं और समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। कुछ उदाहरण हैं जैसे कि चैटजीपीटी, जेमिनी, माइक्रोसॉफ्ट कोपायलट, डीपएल स्वे-चालित अनुवाद प्रणाली, फेस रिकग्निशन, न्यूज रिकमेंडेशन सिस्टम।

सांस्कृतिक पत्रकारिता

सांस्कृतिक पत्रकारिता पत्रकारिता की एक शाखा है जो समाज की संस्कृति, परंपराओं, लोककला, साहित्य, संगीत, नृत्य, रंगमंच, धार्मिक उत्सव, सांस्कृतिक विरासत, भाषाओं और जीवन-मूल्यों से संबंधित विषयों का अध्ययन और प्रस्तुतीकरण करती है। इसका मकसद सिर्फ जानकारी देना नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करना, संवर्धन करना और समाज में सांस्कृतिक चेतना को बढ़ावा देना भी है।

सांस्कृतिक पत्रकारिता में एआई का उपयोग

कृत्रिम बुद्धिमत्ता सांस्कृतिक समाचारों के प्रारूपण, भाषा परिष्कार, व्याकरण सुधार तथा संपादकीय कार्यों को अधिक तेज़, सटीक और प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके माध्यम से समाचारों की गुणवत्ता में सुधार के साथ-साथ पत्रकारों का समय और श्रम भी कम होता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित अनुवाद तकनीकों ने भारतीय भाषाओं में सांस्कृतिक सामग्री के त्वरित, व्यापक एवं अपेक्षाकृत सटीक अनुवाद को संभव बनाया है। इससे विभिन्न भाषाई समुदायों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिला है तथा क्षेत्रीय संस्कृति को राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर पहुँचाने में सहायता मिली है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता लोकगीतों, पांडुलिपियों, चित्रकला, लोक साहित्य, सांस्कृतिक विरासत एवं अन्य ऐतिहासिक दस्तावेजों के डिजिटलीकरण, वर्गीकरण और दीर्घकालिक संरक्षण की प्रक्रिया को अधिक व्यवस्थित एवं प्रभावी बना रही है। इससे सांस्कृतिक धरोहरों का संरक्षण और शोध कार्य अधिक सुलभ हुआ है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित अनुशंसा प्रणालियाँ पाठकों की रुचियों, व्यवहार तथा पढ़ने की प्रवृत्तियों का विश्लेषण कर उन्हें उनकी पसंद के अनुरूप सांस्कृतिक समाचार और सामग्री उपलब्ध कराती हैं। इससे पाठकों की सहभागिता तथा सांस्कृतिक विषयों के प्रति उनकी अभिरुचि में वृद्धि होती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता सांस्कृतिक इतिहास, परंपराओं, लोक मान्यता-

ओं तथा विरासत से संबंधित तथ्यों के सत्यापन में सहायक सिद्ध हो रही है। विभिन्न डिजिटल स्रोतों का विश्लेषण करके यह समाचारों की प्रामाणिकता और विश्वसनीयता को सुदृढ़ बनाने में योगदान देती है, यद्यपि अंतिम सत्यापन के लिए मानवीय संपादकीय निगरानी आवश्यक बनी रहती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता बड़े पैमाने पर उपलब्ध सांस्कृतिक आँकड़ों, दर्शकों की सहभागिता, समाचार उपभोग के पैटर्न तथा डिजिटल रुझानों का विश्लेषण कर मीडिया संस्थानों को अधिक प्रभावी संपादकीय निर्णय लेने में सहायता प्रदान करती है। इससे सांस्कृतिक पत्रकारिता को डेटा-आधारित दृष्टिकोण प्राप्त होता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सहायता से सांस्कृतिक विषयों पर चित्र, वीडियो, ऑडियो, इन्फोस ग्राफिक्स, पॉडकास्ट तथा अन्य मल्टीमीडिया सामग्री का निर्माण कम समय में और अधिक आकर्षक रूप में किया जा सकता है। इससे सांस्कृतिक पत्रकारिता की प्रस्तुति अधिक प्रभावशाली, संवादात्मक तथा व्यापक दर्शक वर्ग के लिए सुलभ बनती है।

एआई का सकारात्मक प्रभाव

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग से समाचार निर्माण की प्रक्रिया पहले की अपेक्षा अधिक तेज, सुव्यवस्थित और प्रभावी हो गई है। इससे सांस्कृतिक समाचारों का संग्रह, संपादन और प्रकाशन कम समय में संभव हो रहा है, जिससे समयबद्ध और अद्यतन सूचना पाठकों तक पहुँचाई जा सकती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने बहुभाषीय पत्रकारिता को नई गति प्रदान की है। एआई आधारित अनुवाद और भाषा प्रसंस्करण तकनीकों के माध्यम से सांस्कृतिक सामग्री को विभिन्न भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में उपलब्ध कराना सरल हुआ है, जिससे विविध भाषाई समुदायों तक सांस्कृतिक जानकारी का प्रसार संभव हो पाया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता सांस्कृतिक धरोहरों के डिजिटल संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके माध्यम से लोककला, लोकगीत, पांडुलिपियाँ, ऐतिहासिक दस्तावेज, चित्रकला तथा अन्य सांस्कृतिक संसाधनों का डिजिटलीकरण, वर्गीकरण और सुरक्षित अभिलेखीकरण अधिक व्यवस्थित ढंग से किया जा रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के कारण छोटे, क्षेत्रीय और स्थानीय सांस्कृतिक आयोजनों को भी डिजिटल माध्यमों के जरिए राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर पहचान मिलने लगी है। इससे स्थानीय संस्कृति, लोक परंपराओं और क्षेत्रीय कलाकारों को व्यापक मंच प्राप्त हुआ है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता शोधकर्ताओं और पत्रकारों के कार्य को अधिक सरल एवं दक्ष बनाती है। सूचना संग्रह, डेटा विश्लेषण, दस्तावेज खोज, अनुवाद तथा प्रारंभिक लेखन जैसे कार्यों में एआई की सहायता से समय और श्रम दोनों की बचत होती है, जिससे वे विश्लेषणात्मक और रचनात्मक कार्यों पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने डेटा आधारित सांस्कृतिक पत्रकारिता को प्रोत्साहित किया है। बड़े पैमाने पर उपलब्ध आँकड़ों का विश्लेषण कर यह सांस्कृतिक प्रवृत्तियों, दर्शकों की रुचियों तथा मीडिया उपभोग के पैटर्न को समझने में सहायता प्रदान करती है, जिससे अधिक तथ्यपरक और प्रभावी रिपोर्टिंग संभव होती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने दिव्यांग पाठकों और दर्शकों के लिए सांस्कृतिक सामग्री तक पहुँच को भी अधिक सुगम बनाया है। टेक्स्ट-टू-स्पीच, स्पीच-टू-टेक्स्ट, स्वचालित उपशीर्षक, स्क्रीन रीडर अनुकूलता तथा अन्य सहायक तकनीकों के माध्यम से दृष्टिबाधित, श्रवणबाधित एवं अन्य दिव्यांग व्यक्तियों के लिए समाचार और सांस्कृतिक सामग्री अधिक सुलभ हो गई है।

सांस्कृतिक पत्रकारिता में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की चुनौतियाँ सांस्कृतिक पक्षपात

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन उसके प्रशिक्षण पर निर्भर करता है। यदि एआई को मुख्यतः पश्चिमी या शहरी संदर्भों से संबंधित सामग्री पर प्रशिक्षित किया गया है, तो वह भारतीय सांस्कृतिक विविधता, स्थानीय परंपराओं, लोक-मान्यताओं तथा क्षेत्रीय सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का समुचित प्रतिनिधित्व नहीं कर पाता। परिणामस्वरूप, समाचारों में कुछ संस्कृतियों को अधिक महत्व मिलता है, जबकि अन्य समुदायों की सांस्कृतिक पहचान और परंपराएँ उपेक्षित रह जाती हैं। सांस्कृतिक पत्रकारिता का मूल उद्देश्य विविध संस्कृतियों का संतुलित और संवेदनशील प्रस्तुतीकरण है, जिसे एआई आधारित एल्गोरिथ्म हमेशा सुनिश्चित नहीं कर पाते। अतः एआई प्रणालियों के विकास में बहुभाषी एवं बहुसांस्कृतिक डेटा का समावेश अत्यंत आवश्यक है।

भारतीय लोक संस्कृति का सीमित प्रतिनिधित्व

भारत की सांस्कृतिक पहचान उसकी लोक परंपराओं, लोककला, लोकनाट्य, लोकसंगीत, आदिवासी संस्कृति तथा क्षेत्रीय भाषाओं में निहित है। वर्तमान एआई मॉडल प्रायः उन विषयों को प्राथमिकता देते हैं जिनका डिजिटल डेटा अधिक मात्रा में उपलब्ध है। इसके कारण ग्रामीण, आदिवासी और लोक सांस्कृतिक विरासत से संबंधित समाचार अपेक्षाकृत कम दिखाई देते हैं। यह असंतुलन भारतीय सांस्कृतिक पत्रकारिता के समावेशी स्वरूप को प्रभावित करता है तथा सांस्कृतिक विविधता के संरक्षण में बाधा उत्पन्न करता है। इसलिए एआई आधारित समाचार प्रणालियों में स्थानीय और लोक संस्कृति से संबंधित डिजिटल अभिलेखों तथा भारतीय भाषाई संसाधनों का विस्तार आवश्यक है।

एआई द्वारा तथ्यात्मक त्रुटियाँ

यद्यपि एआई तेजी से समाचार तैयार करने में सक्षम है, फिर भी यह कभी-कभी तथ्यात्मक त्रुटियाँ या काल्पनिक जानकारी उत्पन्न कर सकता है। सांस्कृतिक पत्रकारिता में ऐसी त्रुटियाँ किसी ऐतिहासिक घटना, धार्मिक परंपरा, सांस्कृतिक प्रतीक, लोककथा या महान व्यक्तित्व के बारे में गलत सूचना प्रसारित कर सकती हैं। इससे न केवल समाचार की विश्वसनीयता प्रभावित होती है, बल्कि सामाजिक भ्रम और सांस्कृतिक विवाद भी उत्पन्न हो सकते हैं। इसलिए एआई द्वारा तैयार सामग्री का प्रकाशन करने से पहले मानवीय संपादकीय सत्यापन अनिवार्य होना चाहिए।

कॉपीराइट संबंधी विवाद

एआई आधारित प्रणालियाँ सामग्री निर्माण के लिए विशाल मात्रा में उपलब्ध पाठ, चित्र, वीडियो और अन्य डिजिटल स्रोतों का उपयोग करती हैं। कई बार यह स्पष्ट नहीं होता कि एआई द्वारा तैयार सामग्री किन मूल स्रोतों पर आधारित है और क्या उन स्रोतों के उपयोग की वैधानिक अनुमति प्राप्त है। इससे कॉपीराइट, बौद्धिक संपदा अधिकार तथा लेखकीय स्वामित्व से संबंधित विवाद उत्पन्न हो सकते हैं। सांस्कृतिक पत्रकारिता में लोक कलाओं, चित्रों, साहित्यिक रचनाओं और पारंपरिक ज्ञान के अनधिकृत उपयोग से सांस्कृतिक अधिकारों का उल्लंघन भी संभव है। इसलिए एआई के उपयोग में स्पष्ट कॉपीराइट नीतियों और पारदर्शी लाइसेंस व्यवस्था की आवश्यकता है।

पत्रकारों की बदलती भूमिका

एआई के बढ़ते उपयोग से पत्रकारों की पारंपरिक भूमिका में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है। जहाँ पहले पत्रकार स्वयं समाचार संकलन, लेखन और संपादन करते थे, वहीं अब एआई प्रारंभिक मसौदा तैयार करने, अनुवाद करने और डेटा विश्लेषण करने में सांस्कृतिक पत्रकारिता में

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की चुनौतियाँ

सांस्कृतिक पक्षपात

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन उसके प्रशिक्षण पर निर्भर करता है। अगर यह मुख्यतः पश्चिमी या शहरी संदर्भों से संबंधित सामग्री पर प्रशिक्षित किया गया है, तो यह भारतीय सांस्कृतिक विविधता का सही प्रतिनिधित्व नहीं कर पाता। इससे समाचारों में कुछ संस्कृतियों को ज्यादा महत्व मिलता है, जबकि दूसरे समुदायों की सांस्कृतिक पहचान उपेक्षित रह जाती है। सांस्कृतिक पत्रकारिता का मुख्य उद्देश्य विविध संस्कृतियों को संतुलित और संवेदनशील तरीके से प्रस्तुत करना है, जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता हमेशा सुनिश्चित नहीं कर पाती। इसलिए, बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक डेटा को शामिल करना बहुत जरूरी है।

भारतीय लोक संस्कृति का सीमित प्रतिनिधित्व

भारत की सांस्कृतिक पहचान उसकी लोक परंपराओं, लोककला, लोकनाट्य, लोकसंगीत, आदिवासी संस्कृति और क्षेत्रीय भाषाओं में निहित है। वर्तमान कृत्रिम बुद्धिमत्ता मॉडल उन विषयों को तरजीह देते हैं जिनका डिजिटल डेटा ज्यादा है। इसकी वजह से ग्रामीण, आदिवासी और लोक सांस्कृतिक विरासत से जुड़े समाचार कम दिखाई देते हैं। यह असंतुलन भारतीय सांस्कृतिक पत्रकारिता को प्रभावित करता है और सांस्कृतिक विविधता के संरक्षण में बाधा उत्पन्न करता है। इसलिए, स्थानीय और लोक संस्कृति से जुड़े डिजिटल अभिलेखों और भारतीय भाषाई संसाधनों का विस्तार जरूरी है।

एल्गोरिथ्मिक पारदर्शिता की कमी

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित समाचार प्रणालियों में प्रयुक्त एल्गोरिथ्म प्रायः “ब्लैक बॉक्स” की तरह कार्य करते हैं, अर्थात् यह स्पष्ट नहीं होता कि किसी विशेष समाचार को प्राथमिकता क्यों दी गई या किसी सांस्कृतिक विषय को कम महत्व क्यों मिला। पारदर्शिता की कमी से समाचार चयन, प्रस्तुति और अनुशंसा की निष्पक्षता पर प्रश्न उठते हैं। सांस्कृतिक पत्रकारिता में यह समस्या और अधिक गंभीर हो जाती है, क्योंकि सांस्कृतिक विविधता का संतुलित प्रतिनिधित्व लोकतांत्रिक संचार का महत्वपूर्ण आधार है। इसलिए, कृत्रिम बुद्धिमत्ता एल्गोरिथ्म में जवाबदेही, व्याख्येयता और पारदर्शिता सुनिश्चित करना आवश्यक है।

सांस्कृतिक पत्रकारिता में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग अनेक नैतिक चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा निर्मित सामग्री की विश्वसनीयता, डीपफेक तकनीक का दुरुपयोग, सांस्कृतिक प्रतीकों का गलत चित्रण, धार्मिक संवेदनाओं पर प्रतिकूल प्रभाव, निजता का उल्लंघन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा निर्मित सामग्री का बिना स्पष्ट प्रतिकटीकरण प्रकाशित करना गंभीर नैतिक प्रश्न हैं। इसके अलावा, यदि कृत्रिम बुद्धिमत्ता किसी सांस्कृतिक समुदाय की पहचान या परंपराओं का गलत प्रतिनिधित्व करती है, तो इससे सामाजिक तनाव भी उत्पन्न हो सकता है। इसलिए, सांस्कृतिक पत्रकारिता में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग स्पष्ट नैतिक मानकों, मानवीय संपादकीय नियंत्रण और उत्तरस

दायी कृत्रिम बुद्धिमत्ता के सिद्धांतों के अनुरूप होना चाहिए।

निष्कर्ष

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने सांस्कृतिक पत्रकारिता के स्वरूप में गुणात्मक परिवर्तन किए हैं। समाचार निर्माण, अनुवाद, अभिलेखीकरण, तथ्य-जाँच और डिजिटल प्रस्तुति में एआई ने कार्यक्षमता, गति और पहुँच को उल्लेखनीय रूप से बढ़ाया है। इसके परिणामस्वरूप सांस्कृतिक सामग्री अधिक इंटरैक्टिव, बहुभाषी और वैश्विक स्वरूप में उपलब्ध हो रही है। इसके बावजूद एआई सांस्कृतिक पत्रकारिता का विकल्प नहीं है। सांस्कृतिक पत्रकारिता का मूल आधार मानवीय संवेदनशीलता, ऐतिहासिक संदर्भ, सामाजिक अनुभव और सांस्कृतिक विवेक है, जिसे केवल एल्गोरिथ्मिक प्रक्रियाओं द्वारा प्रतिस्थापित नहीं किया जा सकता। एआई द्वारा उत्पन्न सामग्री में सांस्कृतिक पक्षपात, भाषाई असंतुलन, स्थानीय संदर्भों की उपेक्षा तथा तथ्यगत त्रुटियों की संभावना बनी रहती है। भारतीय मीडिया के संदर्भ में एआई का उपयोग तभी प्रभावी और उत्तरदायी सिद्ध होगा जब उसके विकास और उपयोग में भारतीय भाषाई विविधता, सांस्कृतिक बहुलता तथा संवैधानिक मूल्यों को प्राथमिकता दी जाए। समाचार संस्थानों को एआई आधारित तकनीकों के उपयोग के साथ-साथ मानव संपादकीय निगरानी, तथ्य-जाँच, सांस्कृतिक सत्यापन और नैतिक मानकों का पालन सुनिश्चित करना होगा। अतः भविष्य की सांस्कृतिक पत्रकारिता का मॉडल “Human-Centered AI Journalism” होना चाहिए, जिसमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानवीय संपादकीय विवेक परस्पर पूरक भूमिका निभाएँ।

संदर्भ सूची:

- Sharma, R. R. (2023). कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में साहित्य, समाज तथा संस्कृति: भविष्य के अवसर व चुनौतियाँ. शोध आलेख.
- Simon, F. M. (2024). Escape me if you can: How AI reshapes news organisations' dependency on platform companies. *Digital Journalism*, 12(2), 149–170. <https://doi.org/10.1080/21670811.2023.2287464>
- Singh, A., & Kumar, R. (2024). कृत्रिम बुद्धिमत्ता और विकसित भारत: इतिहास, संभावनाएँ व चुनौतियाँ. शोध आलेख.
- Bartleman, M., Schapals, A. K., & Dubois, E. (2026). Generative AI and the new landscape of automated journalism: A systematized review of 185 studies (2012–2024). *Journal. Media*, 7(1), 39. <https://doi.org/10.3390/journalmedia7010039>
- Gao, Z. (2023). The change and development of journalism in the age of artificial intelligence. *BCP Business & Management*, 49, 529–532.
- सिंह, स. क. (2025). कृत्रिम-बुद्धिमत्ता और विकसित भारत : इतिहास, संभावनाएँ व चुनौतियाँ. *Idealistic Journal of Advanced Research in Progressive Spectrums (IJARPS)*, 4(12). <https://journal.ijarps.org/index.php/IJARPS/article/view/1113>
- राज, धन (2025). "हिंदी साहित्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता: वर्तमान स्थिति, सांस्कृतिक चुनौतियाँ और भविष्य की संभावनाएँ". सेतु (Setu Bilingual Journal), पिट्सबर्ग, यूएसए। ISSN: 2475-

1359. URL: Setu Magazine.

- Simon, F. M. (2024). Escape me if you can: How AI reshapes news organisations' dependency on platform companies. *Digital Journalism*, 12(2), 149–170. <https://doi.org/10.1080/21670811.2023.2287464>
- Kumar, A., & Singh, J. (2025). AI-powered journalism: Opportunities, challenges, and the road ahead. *International Journal of Advanced Mass Communication and Journalism*, 6(2), 203-208. doi.org
- Pavlik, J. V. (2023). *Disruption and Digital Journalism*. Routledge.
- Rangaswamy, N. (2022). Artificial intelligence and Indian language technologies. *Economic and Political Weekly*, 57(18), 45–52.
- NITI Aayog. (2018). National strategy for artificial intelligence #AIForAll. Government of India.
- UNESCO. (2025). Report of the Independent Expert Group on Artificial Intelligence and Culture (CULTAI). UNESCO.
- <https://youtu.be/KCXSZzoxMyo>
- पाटीदार, स. (2025, 1 अप्रैल). पत्रकारिता में पाँचवीं बनाती "कृत्रिम बुद्धिमत्ता". देशबंधु.
- Choudhary, S., Sambharkar, V., & Jain, S. K. (2026). भारत में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विनियमन की चुनौतियाँ और संभावनाएँ: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन [Challenges and prospects of regulating artificial intelligence in India: An analytical study]. *IRE Journals*, 9(12), 1–8. doi.org